

## रॉबर्ट वानॉय , निर्वासन से निर्वासन, व्याख्यान 10बी

### 1 सैमुअल, वाचा किंगशिप, 1 और 2 किंग्स

राजशाही विरोधी मार्ग - राज्य का नवीनीकरण

यह अगली स्लाइड उन पाँच अनुच्छेदों के कथित राजशाही-विरोधी विभाजन का सारांश प्रस्तुत करती है: प्रारंभिक स्रोत, 9:1-10:16 और 11:1-15; और देर से स्रोत, अध्याय 8, 10, और 12। 11:1-15 और 10:17-21 में तारांकन पर ध्यान दें। 1 शमूएल 11:1-15 शाऊल की अम्मोनियों से लड़ाई और उसके परिणाम की कहानी है - राज्य को नवीनीकृत करने और शाऊल को राजा बनाने के लिए गिलगाल जाना। मुख्यधारा के बाइबिल विद्वानों का यह कहना आम है कि यह एक कहानी या परंपरा है कि कैसे राजा का उदय हुआ Israel, और इसे 1 शमूएल 10:17-27 के साथ जोड़ दिया जाता है जब उसे लॉटरी द्वारा चुना जाता है। कहा जाता है कि उन दो परस्पर विरोधी वृत्तांतों को 11:14 में एक संशोधनात्मक सम्मिलन द्वारा सामंजस्यपूर्ण बनाया गया है जहां सैमुअल कहते हैं, "आइए गिलगाल जाएं और राज्य को नवीनीकृत करें।" "राज्य को नवीनीकृत करें" "राज्य की स्थापना" के बजाय सामंजस्य स्थापित करने का एक तरीका है। बस कुछ टिप्पणियाँ: आपके हैंडआउट में इसके बारे में और भी बहुत कुछ है, लेकिन मुझे लगता है कि समय के कारण मैं गहराई में नहीं जा पा रहा हूँ, इसलिए हम कुछ अन्य चीजों पर आगे बढ़ सकते हैं। लेकिन आइए हैंडआउट पर वापस जाएं। मैं अध्याय 12, 14 और 15 पर कुछ समय बिताना चाहता हूँ।

1 शमूएल 12:1-5 - राजत्व और धर्मतंत्र की संरचना हम आपके हैंडआउट के पृष्ठ 4 पर हैं, तो आइए 1 शमूएल 11:14 से 12 पर नजर डालें :25. आइए पहले 12:1-25 को देखें। 1 सैमुअल 12 में धर्मतंत्र की संरचना में राजत्व की शुरूआत के अवसर पर यहोवा के प्रति अपनी निष्ठा को नवीनीकृत करने की सैमुअल की चुनौती का वर्णन किया गया है। Israel मुझे ऐसा लगता है कि 1 शमूएल 12 में यही चल रहा है। अध्याय यहां सूचीबद्ध उपखंडों में विभाजित है। पहला, श्लोक 1-5. आइए इन छंदों को पढ़ें और फिर टिप्पणी देखें। श्लोक 1-5 में, शमूएल सभी से कहता है Israel, "मैंने जो कुछ तुम ने मुझ से कहा था, वह सुन लिया है, और तुम्हारे ऊपर एक राजा नियुक्त कर दिया है। अब आपका नेता एक राजा है। जहाँ तक मेरी बात है, मैं बूढ़ा और सफ़ेद हो गया हूँ, और

मेरे बेटे यहाँ तुम्हारे पास हैं। मैं युवावस्था से लेकर आज तक आपका नेता रहा हूँ। यहाँ मैं खड़ा हूँ। यहोवा और उसके अभिषिक्त के साम्हने मेरे विरुद्ध गवाही दो। मैं किसका बैल ले गया हूँ? मैंने किसका गधा पकड़ लिया है? मैंने किसे धोखा दिया है? मैंने किस पर अत्याचार किया है? मैंने अपनी आँखें बंद करने के लिए किसके हाथ से रिश्वत ली है? अगर मैंने इनमें से कोई भी काम किया है तो मैं उसे सही कर दूंगा। उन्होंने उत्तर दिया, "आपने हमें धोखा नहीं दिया है या हमारे ऊपर अत्याचार नहीं किया है।" 'आपने किसी के हाथ से कुछ नहीं लिया।' शमूएल ने उन से कहा, यहोवा तुम्हारे विरुद्ध साक्षी है, और उसका अभिषिक्त भी आज के दिन इस बात का गवाह है, कि तुम ने मेरे हाथ में कुछ भी नहीं पाया। उन्होंने कहा, 'वह गवाह है।'

अब उन छंदों में मुझे लगता है कि सैमुअल जो कर रहा है वह अपने कार्यालय के पिछले आचरण के दौरान अपनी स्वयं की वाचा की वफादारी की पुष्टि कर रहा है क्योंकि उसने लोगों को उस व्यक्ति के साथ प्रस्तुत किया था जिसे राजत्व की जिम्मेदारी संभालनी थी। सैमुअल देश के धार्मिक और नागरिक नेता रहे हैं। वह न्यायाधीश थे, लेकिन ध्यान दें कि वह क्या कहते हैं कि उन्होंने नहीं किया है, और जो वे कहते हैं कि उन्होंने नहीं किया है। यह निश्चित रूप से अध्याय 8 में प्रतिबिंबित होता है, जहां "चारों ओर के राष्ट्रों की तरह राजा" को ऐसे व्यक्ति के रूप में वर्णित किया गया है जो लेता है। सैमुअल कह रहे हैं, "मैं उस तरह का नेता नहीं था।"

1 शमूएल 12:6-12 - यहोवा के धर्मी कार्य 1 शमूएल 12:6-12 में, शमूएल इस्राएल के धर्मत्याग को न्यायिक रूप से स्थापित करने के लिए निर्गमन की घटनाओं और न्यायाधीशों की अवधि में यहोवा के धर्मी कार्यों का सारांश उपयोग करता है। एक राजा से अनुरोध करने में दूसरे शब्दों में, वह जो करता है वह यह दर्शाने के लिए कि उसके पास Israel राजा की मांग करने का कोई आधार नहीं है, प्रभु की ओर से शक्तिशाली कार्यों का सारांश प्रस्तुत करना है। Israel वह श्लोक 6-12 है: "तब शमूएल ने लोगों से कहा, 'वह यहोवा है जिसने मूसा और हारून को नियुक्त किया और तुम्हारे पूर्वजों को बाहर लाया Egypt। इसलिये अब तुम यहीं खड़े रहो, क्योंकि मैं यहोवा के साम्हने तुम्हारे और तुम्हारे पुरखाओं के लिथे यहोवा ने जितने धर्म के काम किए हैं, उन सब का प्रमाण तुम्हें दूंगा। याकूब के प्रवेश करने के बाद Egypt उन्होंने सहायता के लिये यहोवा की दोहाई दी, और यहोवा ने

मूसा और हारून को भेजा, और उन्होंने तुम्हारे पुरखाओं को वहां से निकालकर Egypt इस स्थान में बसाया। परन्तु वे अपने परमेश्वर यहोवा को भूल गए; इसलिये उस ने उनको हासोर के सेनापति सीसरा, और पलिशियों और उसके राजा के हाथ में, Moab जो उनसे लड़ते थे, बेच दिया। उन्होंने यहोवा की दोहाई देकर कहा, हम ने पाप किया है; हम ने यहोवा को त्याग दिया है, और बाल देवताओं और अशतोरेत देवताओं की उपासना करने लगे हैं। परन्तु अब हमें हमारे शत्रुओं के हाथ से बचा, और हम तेरी सेवा करेंगे।"

प्रभु ने क्या किया? उसने उद्धारकर्ताओं को भेजा, और उसने कुछ न्यायाधीशों का उल्लेख किया है, जो इसे स्वयं शमूएल के समय तक ले जाता है, जिसे प्रभु ने उद्धारकर्ता के रूप में भेजा था। "तब यहोवा ने यरूबाल, बाराक, यिप्तह, और शमूएल को भेजा, और उस ने तुम को चारों ओर के शत्रुओं के हाथ से छुड़ाया, और तुम निडर जीवित रहे। परन्तु जब तू ने देखा कि अम्मोनियों का राजा नाहाश तेरे विरुद्ध आगे बढ़ रहा है, तब तू ने मुझ से कहा, नहीं, हम चाहते हैं कि एक राजा हम पर प्रभुता करे, यद्यपि तेरा परमेश्वर यहोवा ही तेरा राजा था। कर रहा है—वह पिछली पीढ़ियों के माध्यम से अपने लोगों को प्रभु की वाचा की वफादारी दिखा रहा है, और दिखा रहा है कि कैसे उन्हें प्रभु का अनुसरण करने और उसके प्रति वफादार रहने में अपनी सुरक्षा मिलनी चाहिए थी, लेकिन वे इससे संतुष्ट नहीं थे। इसलिए वह एक राजा से अनुरोध करके उनके धर्मत्याग को स्थापित करता है।

1 शमूएल 12:13 - राजत्व का समय आ गया है

श्लोक 13 अपने आप में कायम है। सैमुअल इंगित करता है कि उस धर्मत्याग के बावजूद, प्रभु ने अपने लोगों पर शासन के साधन के रूप में राजत्व का उपयोग करना चुना। परमेश्वर के सर्वोच्च उद्देश्य में राजत्व का समय आ गया है। तो श्लोक 13 कहता है, यहाँ वह राजा है जिसे तुमने चुना है, जिसे तुमने माँगा था: "देखो, यहोवा ने तुम्हारे ऊपर एक राजा नियुक्त किया है।" उन्हें राजा देना प्रभु का उद्देश्य था।

## 1 शमूएल 12:14-15 - सशर्त वाचा

मैं 1 शमूएल 12:14-15 पर कुछ समय बिताना चाहता हूँ। आपके हैंडआउट में मेरे पास जो कुछ है, उसे मुझे पढ़ने दीजिए। मैं पहले एनआईवी में श्लोक 14 और 15 पढ़ूंगा। एनआईवी कहता है, "यदि तुम यहोवा का भय मानते हो, उसकी सेवा करते हो और उसकी आज्ञा मानते हो और उसकी आज्ञाओं के विरुद्ध विद्रोह नहीं करते हो, और यदि तुम और तुम पर शासन करने वाला राजा दोनों अपने परमेश्वर यहोवा का अनुसरण करते हो - तो अच्छा है! परन्तु यदि तुम यहोवा की बात नहीं मानोगे, और उसकी आज्ञाओं के विरुद्ध बलवा करोगे, तो उसका हाथ तुम्हारे विरुद्ध उठेगा, जैसा तुम्हारे पूर्वजों के विरुद्ध था।" मुझे लगता है कि आपके पास यहां जो कुछ है वह उस चीज़ का पुनर्कथन है जिसे आप सशर्त अनुबंध कह सकते हैं: यदि आप कुछ चीज़ें करते हैं - भगवान से डरें, उसका पालन करें, उसकी आज्ञा के खिलाफ विद्रोह न करें। आप कह सकते हैं कि राजसत्ता को धर्मतंत्र में एकीकृत करने के अवसर पर सशर्त उस वाचा का पुनर्कथन एक अतिरिक्त आयाम लेता है। लंबे समय से व्याख्याकारों की आम सहमति रही है कि श्लोक 14 में केवल एक प्रोटेसिस व्याकरणिक अधीनस्थ उपवाक्य है जो एक शर्त को व्यक्त करता है, "यदि।" इसमें केवल प्रोटेसिस होता है और एपोडोसिस का अभाव होता है। सामान्यतः अपनाया गया अनुवाद आरएसवी और एनआईवी के समान है। अब यदि आप स्क्रीन पर देखें, तो मुझे लगता है कि किंग जेम्स इसका सही अनुवाद करते हैं। यह इसे एपोडोसिस के साथ अनुवादित करता है। कविता के ठीक बीच में, आपको एपोडोसिस को चिह्नित करने वाला यह "तब" मिलता है। आप देखिए, किंग जेम्स संस्करण कहता है, "यदि आप प्रभु का भय मानते हैं और उसकी सेवा करते हैं और उसका पालन करते हैं, उसकी आज्ञाओं के विरुद्ध विद्रोह नहीं करते हैं, तो आप और वह राजा जो आप पर शासन करता है, दोनों अपने परमेश्वर प्रभु में शक्ति के साथ बने रहेंगे।" लेकिन यदि आप एनआईवी और आरएसवी को देखते हैं, तो आरएसवी कहता है, "यदि आप यहोवा का भय मानते हैं और उसकी आज्ञा मानते हैं और उसके विरुद्ध विद्रोह नहीं करते हैं, और यदि आप और आपके ऊपर शासन करने वाला राजा दोनों अपने परमेश्वर यहोवा का अनुसरण करते रहते हैं, "यह आपूर्ति करता है" यह ठीक रहेगा। वह हिब्रू पाठ में नहीं है; यह इसे जोड़ता है। दूसरे शब्दों में, इसमें केवल वह प्रोटेसिस है; यह केवल "यदि" है जो पूरी कविता में नीचे तक जाता है, और कोई एपोडोसिस

नहीं है, "तब।" एपोडोसिस आरएसवी में "यह ठीक हो जाएगा" द्वारा प्रदान किया जाता है। एनआईवी मूल रूप से यही करता है, "यदि आप यहोवा का भय मानते हैं और उसकी सेवा करते हैं और उसकी आज्ञा मानते हैं और उसकी आज्ञाओं के विरुद्ध विद्रोह नहीं करते हैं, और यदि आप और आपके ऊपर शासन करने वाला राजा दोनों अपने परमेश्वर यहोवा का अनुसरण करते हैं - [एनआईवी कहता है] अच्छा है!" "अच्छा" हिब्रू पाठ में नहीं है; वह प्रदान किया गया है।

अब पृष्ठ 5 के शीर्ष पर अपने हैंडआउट पर वापस जाएँ जहाँ मेरे पास आरएसवी है। लेकिन पृष्ठ 5 पर दूसरे पैराग्राफ की टिप्पणियों पर ध्यान दें: अंतिम वाक्यांश आरएसवी में "यह अच्छा होगा" या एनआईवी में "अच्छा"। वे मैसोरेटिक पाठ में नहीं होते हैं, और वाक्य को पूरा करने के लिए उन्हें जोड़ा जाना चाहिए। एचपी स्मिथ ने इस ओर इशारा किया है, और छंदों का इस तरह से अनुवाद करने का यही तर्क है, बावजूद इसके कि हिब्रू पाठ में इसे उस तरह से नहीं कहा गया है। स्मिथ बताते हैं, "अगर हम एपोडोसिस की शुरुआत *वेकी से करते हैं* एटीईएम का अनुवाद आम तौर पर पद्य के बीच में 'तब' किया जाता है, जैसा कि किंग जेम्स संस्करण करता है" - यह व्याकरणिक रूप से सही बात है, और हिब्रू को इसी तरह पढ़ा जाता है। लेकिन स्मिथ को लगता है कि इसका इस तरह से अनुवाद करना अतिरेक पैदा करता है क्योंकि "यह उन्हें समान प्रस्ताव देता है: 'यदि आप यहोवा से डरते हैं, और उसकी आज्ञा मानते हैं, और उसकी आज्ञाओं के विरुद्ध विद्रोह नहीं करते हैं, तो आप यहोवा का अनुसरण करेंगे।'" आप देखते हैं, वह है। ऐसा कहने का कोई मतलब नहीं है; यह अतिरेक है। इसलिए कई अनुवादों और कई टिप्पणीकारों ने परंपरागत रूप से पूरी कविता के माध्यम से उस सशर्तता को जारी रखा है, और एक एपोडोसिस प्रदान किया है जो मूल पाठ में नहीं है।

अब मुझे ऐसा लगता है कि यदि आप 1 शमूएल 12:14 की तुलना श्लोक 15 से करते हैं, जो वास्तव में एक ही कथन है लेकिन सकारात्मक शब्दों के बजाय नकारात्मक शब्दों में, तो यह स्पष्ट है कि संरचनात्मक रूप से श्लोक बीच में विभाजित होता है और एक प्रोटेसिस और एक होता है एपोडोसिस एनआईवी में श्लोक 15 में लिखा है, "लेकिन यदि तुम प्रभु की बात नहीं मानते हो, यदि तुम उसकी आज्ञाओं के विरुद्ध विद्रोह करते हो, तो उसका हाथ तुम्हारे विरुद्ध वैसे ही उठेगा जैसे तुम्हारे पूर्वजों के विरुद्ध था।" इसे पढ़ना चाहिए, " *तब* उसका हाथ तुम्हारे विरुद्ध होगा" जैसा कि

14 में है। किंग जेम्स के पास "तब" है: "यदि तुम आज्ञा नहीं मानोगे, तब।" आरएसवी ने कहा है, "यदि आप नहीं सुनेंगे, तो।" एनआईवी कहता है, "यदि आप आज्ञा का पालन नहीं करते हैं" - यह वहां "तब" नहीं डालता है, लेकिन यह निहित है - "उसका हाथ आपके खिलाफ होगा।" तो मुझे ऐसा लगता है कि जब आप श्लोक 15 को देखते हैं, तो इसकी संरचना श्लोक 14 के समान ही होती है।

दोनों छंदों का अनुवाद एक ही तरह किया जाना चाहिए। खैर अब, इससे क्या फर्क पड़ता है? जो चल रहा है उसका महत्व क्या है? श्लोक 14 का अनुवाद करने पर स्मिथ की आपत्ति पर जाएं जिस तरह किंग जेम्स श्लोक के मध्य में "तब" एपोडोसिस के साथ करते हैं। स्मिथ की आपत्ति अभिव्यक्ति की उनकी समझ पर बदल जाती है, "तब आप यहोवा का अनुसरण करेंगे" - पद्य की अंतिम पंक्ति: "तब आप और राजा जो आप पर राज करते हैं, दोनों अपने परमेश्वर यहोवा का अनुसरण करते रहेंगे।" उनका कहना है कि यह अतिरेक है, वही बात जो कविता का पहला भाग कहता है।

हालाँकि, यह अभिव्यक्ति पुराने नियम में कई अन्य स्थानों पर पाई जाती है: 2 शमूएल 2:10, 15:13; 1 राजा 12:20 और 16:21. मैं उस पर गौर करना चाहता हूँ, क्योंकि उन सभी स्थानों पर आप उस अभिव्यक्ति को देखेंगे जिसका उपयोग यह इंगित करने के लिए किया जाता है कि इज़राइल के लोगों के एक वर्ग ने ऐसी स्थिति में एक विशेष राजा का अनुसरण करना चुना है जहां एक और संभावित विकल्प था। 2 शमूएल 2:10 को देखें। "शाऊल का पुत्र ईशबोशेत जब राज्य करने लगा तब वह चालीस वर्ष का या Israel, और दो वर्ष तक राज्य करता रहा। हालाँकि, के घराने ने डेविड का अनुसरण किया। हिब्रू में, Judah डेविड के लिए यह अभिव्यक्ति है: "यहूदा का घराना डेविड के पीछे था।" दूसरे शब्दों में, आपके पास डेविड का अनुसरण करने का निर्णय है, जबकि ईश-बोशेत राष्ट्र के शेष भाग पर बना रहा। एक विकल्प था; ईश-बोशेत और डेविड के बीच वफादारी विभाजित थी। और यहूदा "दाऊद के पीछे था।" "

आइए 1 राजा 12:20 को देखें: "जब सब इस्राएलियों ने सुना कि यारोबाम लौट आया है, तब उन्होंने उसे सभा में बुलवाया, और उसे सारे इस्राएल पर राजा नियुक्त किया। दाऊद के घराने के बाद केवल गोत्र ही Judah रह गया।" एनआईवी कहता है "दाऊद के घराने के प्रति वफादार।" यह राज्य के विभाजन का समय है, और यारोबाम उत्तर में राज्य कर रहा है; केवल यहूदा ही दाऊद के

पीछे है, केवल यहूदा ही दाऊद के पीछे है। राज्य के विभाजन के समय यहूदा को "दाऊद का घराना" कहा जाता था।

1 राजा 16:21 को देखें: "तब इस्राएल के लोग दो गुटों में विभाजित हो गए; आधे ने गीनत के पुत्र तिब्नी को राजा बनाने का समर्थन किया, और दूसरे आधे ने ओम्री का समर्थन किया। अब, वह शब्द "समर्थित" वास्तव में "बाद" है, इसलिए आधे "गीनाथ के पुत्र तिब्नी के बाद" थे और दूसरे आधे "ओमरी के बाद" थे। इसलिए ज़िमरी की मृत्यु के बाद तिब्नी और ओम्री के बीच वफादारी विभाजित हो गई।

2 शमूएल 15:13 अबशालोम के विद्रोह के बारे में है। मैं उस पर गौर नहीं करूंगा क्योंकि हम पर समय की कमी है, लेकिन इस्राएल के लोगों ने अबशालोम के प्रति निष्ठा रखने और दाऊद के बजाय उसे राजा के रूप में मान्यता देने का फैसला किया; वे अबशालोम के पीछे थे। उसी अभिव्यक्ति का प्रयोग 1 शमूएल 12:14 में पद के मध्य में किया गया है।

विभाजित वफादारी की संभावना [1 शमूएल 12:14] - याहवे के प्रति वफादारी व्यक्त करने वाली सशर्त शर्त

वाक्यांश की इस समझ का उपयोग करते हुए, कोई कह सकता है कि यहां गिलगाल में, इज़राइल ने एक नए युग में प्रवेश किया जिसमें पुरानी वाचा सशर्त ने एक नया आयाम लिया। उससे मेरा मतलब क्या है? राजत्व की संस्था के साथ, लोगों के लिए यहोवा और मानव राजा के बीच विभाजित वफादारी की संभावना पैदा होती है। इस वजह से, शमूएल ने लोगों को यहोवा की आज्ञा मानने और उसकी आज्ञाओं के विरुद्ध विद्रोह न करने के अपने दृढ़ संकल्प को नवीनीकृत करने की चुनौती दी। एपोडोसिस इसी को संबोधित कर रहा है - यह प्रदर्शित करने के लिए कि वे यहोवा को अपने संप्रभु के रूप में पहचानना जारी रखते हैं। तब यह निष्कर्ष निकालना आवश्यक नहीं है कि अभिव्यक्ति "यदि आप यहोवा से डरते हैं, तो आप यहोवा का अनुसरण करेंगे" एक अतिरेक या एक समान प्रस्ताव है। बल्कि, यह उस नए युग के संदर्भ में सशर्त बुनियादी वाचा की अभिव्यक्ति है जिसमें इज़राइल प्रवेश कर रहा था। यदि इस्राएल यहोवा का भय माने, उसकी आज्ञा माने, और उसके विरुद्ध बलवा न करे, तो वह क्या करेगी? वह दिखाएगी कि वह यहोवा को अपने संप्रभु के

रूप में पहचानना जारी रखती है, भले ही मानव शासन को धर्मतंत्र की संरचना में पेश किया गया हो। Israel उसे यहोवा के प्रति अपनी निष्ठा को अपने नए शासक के प्रति निष्ठा से प्रतिस्थापित नहीं करना चाहिए। इसी मुद्दे को संबोधित किया जा रहा है और यही वह मुद्दा है जिसे किंग जेम्स के अपवाद के साथ ये अनुवाद अस्पष्ट करते हैं।

मैं उस समिति का हिस्सा था जिसने न्यू लिविंग ट्रांसलेशन पर काम किया था। मैंने न्यू लिविंग में यह शब्द रखा है: "अब यदि तुम प्रभु का भय मानते हो और उसकी आराधना करते हो, और उसकी वाणी सुनते हो, और यदि तुम प्रभु की आज्ञाओं के विरुद्ध विद्रोह नहीं करते हो, तो तुम और तुम्हारा राजा दोनों दिखा देंगे कि तुम प्रभु को पहचानते हो।" अपने देवता।" यह विभाजित निष्ठा की संभावना का अनुमान लगाता है। मुझे ऐसा लगता है कि यही मुद्दा है।

1 शमूएल 12:16-21 ठीक है, 1 शमूएल 12:16-21: "स्वर्ग से दिया गया एक संकेत और शमूएल का अनुरोध, यहोवा के स्थान पर एक राजा की माँग करने में इस्राएल के धर्मत्याग की गंभीरता को प्रदर्शित करने के लिए।" पद 16 में सैमुएल कहता है, "देखो यह बड़ा काम जो यहोवा तुम्हारी आंखों के साम्हने करने पर है! क्या अभी गेहूँ की कटाई नहीं हो रही है? मैं यहोवा से गरज और वर्षा भेजने के लिये प्रार्थना करूँगा। और तू जान लेगा कि तू ने राजा के लिये प्रार्थना करके यहोवा की दृष्टि में कैसा बुरा काम किया है।"

इसलिए यहोवा के स्थान पर राजा की माँग करना एक गंभीर पाप था, क्योंकि यह पिछले उद्धारों के प्रति अवमानना और यहोवा के वाचा शासन में विश्वास की कमी को प्रदर्शित करता था।

1 सैमुअल 12:23-25 - नए आदेश में सैमुअल की भूमिका 1 सैमुअल 12:23-25 में पृष्ठ 7 पर, सैमुअल नए आदेश में अपने स्वयं के निरंतर कार्य का वर्णन करता है। ध्यान दें जब वह श्लोक 23 में कहता है, "जहां तक मेरी बात है, यह मुझसे दूर रहे कि मैं तुम्हारे लिए प्रार्थना न करके प्रभु के विरुद्ध पाप करूं। और मैं तुम्हें वह मार्ग सिखाऊँगा जो अच्छा और ठीक है।" अध्याय 12 को अक्सर "सैमुअल का विदाई संबोधन" कहा जाता है। वास्तव में, एनआईवी उस शीर्षक का उपयोग करता है। यह कोई विदाई संबोधन नहीं है—सैमुअल बहुत जल्दी कहीं नहीं जा रहा है। वह अब

उनका नागरिक नेता नहीं रहेगा बल्कि वह लोगों के लिए प्रार्थना करेगा और उन्हें निर्देश देगा; वह पैगम्बर की भूमिका निभाने जा रहे हैं। वह कहता है, “मैं तुम्हें वह मार्ग सिखाऊंगा जो अच्छा और सही है।” वह कौन सा तरीका है जो अच्छा और सही है? यह वाचा का मार्ग है. और निःसंदेह, वह ऐसा करता है, क्योंकि वह शाऊल को जवाबदेह ठहराता है और अंततः शाऊल को अस्वीकार कर देता है।

इसलिए सैमुअल ने नए आदेश में अपने स्वयं के निरंतर कार्य का वर्णन किया है, और श्लोक 24 में इज़राइल के केंद्रीय वाचा संबंधी दायित्वों की पुनरावृत्ति के साथ अपनी टिप्पणी समाप्त की है, जो इज़राइल पर वाचा अभिशाप के खतरे से प्रबलित है, अगर वे धर्मत्याग करते हैं। श्लोक 24 काफी हद तक इसराइल के अनुबंध दायित्व का सार बताता है। यह एक महान श्लोक है. ध्यान दें कि यह क्या कहता है: "परन्तु यहोवा का भय मानना और पूरे मन से वफ़ादारी से उसकी सेवा करना सुनिश्चित करो।" यह वह मौलिक संविदात्मक दायित्व है। वह क्या प्रेरित करता है? "विचार करें कि उसने आपके लिए कितने महान कार्य किए हैं।" वहाँ फिर से वह ऐतिहासिक प्रस्तावना है, जो अपने लोगों की ओर से महान राजा के लाभकारी कार्यों को याद करती है। श्लोक 25 में शर्ते इस प्रकार हैं: "यदि तुम बुराई करते रहे, तो तुम और तुम्हारा राजा दोनों नष्ट हो जाएंगे।" यह वाचा अभिशाप का खतरा है.

1 शमूएल 8-12 सारांश - शाऊल के उद्घाटन पर यहोवा के प्रति नवीनीकृत निष्ठा अब मैं यहीं पर रुकने जा रहा हूँ। पृष्ठ 7 पर जो कुछ है वह 11:14-15 की विस्तृत चर्चा है। मैं इसे छोड़ रहा हूँ, लेकिन मुझे लगता है कि 8-12 के इस खंड में आपके पास जो है वह एक राजा के लिए अनुरोध करने में इज़राइल का पाप है, प्रभु का दृढ़ संकल्प है कि राज करने का समय आ गया है, उस राजा को नियुक्त करने के लिए सैमुअल को उनका निर्देश , और फिर समस्त इस्राएल की सभा में प्रभु के प्रति निष्ठा के नवीकरण के संदर्भ में शाऊल के शासन का उद्घाटन। शाऊल के उद्घाटन के अवसर पर इज़राइल ने प्रभु के प्रति अपनी निष्ठा को नवीनीकृत किया।

यदि आप 1 शमूएल 11:14-15 को देखें, तो मैंने वहां कुछ संक्षिप्त टिप्पणियाँ की हैं। 11:14-15 अध्याय 12 में जो कुछ भी चल रहा है उसका सारांश प्रस्तुत करें। आपने 11:14-15 में पढ़ा कि

शमूएल की अम्मोनियों पर विजय के बाद, वह लोगों से कहता है, "आओ, हम गिलगाल को चलें और वहाँ"— एनआईवी कहता है, "अपने राजत्व की पुनः पुष्टि करें।" मुझे लगता है कि यह एक खराब अनुवाद है। इसे कहना चाहिए "राज्य का नवीनीकरण करें।" इसका मतलब "पुनः पुष्टि" नहीं है, इसका मतलब "नवीनीकरण" है। सवाल यह है कि राज्य का नवीनीकरण किसका? और मुझे लगता है कि संदर्भ में यह यहोवा का राज्य है। यह यहोवा के प्रति निष्ठा का नवीनीकरण है: "आइए हम गिलगाल जाएँ और राज्य का नवीनीकरण करें।" इसलिए सभी लोग गिलगाल गए, और एनआईवी का कहना है, "यहोवा की उपस्थिति में शाऊल को राजा के रूप में पुष्टि करने के लिए।" इसमें यह नहीं कहा गया है कि "शाऊल के राज्य की पुष्टि करो"; यह कहता है, "उन्होंने शाऊल को राजा बनाया।" उन्होंने पहले से ही शाऊल को राजा बनने के लिए चुन लिया था, इसलिए वे राज्य, यहोवा के राज्य, को नवीनीकृत करने के लिए गिलगाल गए, और वहाँ उन्होंने शाऊल को राजा बनाया। पद 14 में यह शाऊल के राज्य का नवीनीकरण नहीं है, क्योंकि शाऊल का अभी तक राजा के रूप में उद्घाटन नहीं हुआ था; यह उनके शासनकाल का उद्घाटन है। "इसलिए वे गिलगाल गए और यहोवा के सामने शाऊल को राजा बनाया। वहाँ उन्होंने यहोवा के सामने मेलबलि चढ़ाई, और शाऊल और सब इस्राएलियों ने बड़ा उत्सव मनाया।"

अब दो अत्यंत महत्वपूर्ण अनुवाद मुद्दे हैं जिन पर मैंने अभी चर्चा की है। हैंडआउट में और भी विवरण हैं—मैं इसके लिए आपको जवाबदेह नहीं ठहराऊंगा। यदि आप उसे हैंडआउट में पढ़ना चाहते हैं, तो आपको उस पर कुछ और विवरण दिखाई देंगे। परन्तु वे राज्य का नवीनीकरण करने और शाऊल को राजा बनाने के लिये गिलगाल को गए। उन्होंने यहोवा के लिये मेलबलि चढ़ायी। शाऊल और सभी इस्राएलियों ने एक बड़ा उत्सव मनाया और उसका विवरण विस्तार से वर्णित है।

6. शमूएल ने शाऊल को अस्वीकार किया, 1 शमूएल 13 और 15

ठीक है, यदि आप अपनी रूपरेखा पर वापस जाते हैं, तो संख्या 6. है "सैमुअल शाऊल को अस्वीकार करता है, 1 शमूएल 13 और 15।" अध्याय 13 में, पलिशती फिर से इस्राएल से लड़ने के लिए इकट्ठे हुए और आपने पद 7 में पढ़ा, "शाऊल गिलगाल में रह गया और उसके साथ उसकी

सारी सेना भय से काँप रही थी। उसने सात दिन तक प्रतीक्षा की, अर्थात् शमूएल ने जो समय ठहराया था; परन्तु शमूएल गिलगाल में न आया, और शाऊल के लोग तितर-बितर होने लगे।” अब शमूएल द्वारा निर्धारित सात दिनों के समय का संदर्भ 1 शमूएल 10:8 का संदर्भ है। जिस समय शमूएल ने शाऊल का अभिषेक किया, उस समय उसने उससे कहा: “मुझसे पहले गिलगाल को जा; मैं होमबलि और मेलबलि चढ़ाने के लिये निश्चय तेरे पास आऊंगा, परन्तु जब तक मैं तेरे पास आकर तुझे न बताऊं कि तुझे क्या करना है, तब तक तुझे सात दिन तक ठहरना पड़ेगा। तो ये है स्थिति शाऊल गिलगाल को गया। वह वहां सात दिनों तक इंतजार कर चुका है और सैमुअल अभी तक नहीं आया है। इसलिए आयत 9 में शाऊल कहता है, “मेरे लिए होमबलि और मेलबलि लाओ।” शाऊल ने होमबलि चढ़ाया, और जब वह भेंट चढ़ा चुका, तब शमूएल उठा। इसलिए उसने ज्यादा देर तक इंतजार नहीं किया; अभी भी वह सातवाँ दिन था। “क्या कर डाले?” सैमुअल से पूछा। शाऊल ने उत्तर दिया, ‘जब मैं ने देखा कि वे लोग तितर-बितर हो रहे हैं, और तुम नियत समय पर नहीं आए... तो मैं ने सोचा, अब पलिशती गिलगाल में मुझ पर चढ़ाई करेंगे, और मैं ने यहोवा की कृपा की आशा नहीं की। इसलिए मुझे भेंट चढ़ाने के लिए बाध्य महसूस हुआ।” 1 शमूएल 13:13 में शमूएल की प्रतिक्रिया उसके प्रति निर्देशित है: “तू ने वह आज्ञा नहीं मानी जो तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे दी थी; यदि तुम होते तो वह सदैव के लिए तुम्हारा राज्य स्थापित कर देता। परन्तु अब तेरा राज्य कायम न रहेगा; यहोवा ने अपने मन के अनुसार एक पुरूष ढूंढ़ लिया है, और उसे अपनी प्रजा का प्रधान नियुक्त किया है। इसलिए क्योंकि शाऊल ने भविष्यवक्ता शमूएल के वचन का पालन नहीं किया जैसा कि उसे निर्देश दिया गया था, प्रभु ने उससे कहा कि उसका कोई स्थायी राजवंश नहीं होगा। इस बिंदु पर उन्हें राजा के रूप में उनके पद से नहीं हटाया जाएगा, लेकिन उनके पास कोई स्थायी राजवंश नहीं होगा।

अध्याय 15 एक और अध्याय है जहां शाऊल को शमूएल के माध्यम से प्रभु से एक निर्देश प्राप्त होता है। आपने पहली आयत में पढ़ा, “शमूएल ने शाऊल से कहा, ‘मैं वही हूँ जिसे यहोवा ने अपनी प्रजा इस्राएल पर राज्य करने के लिये तेरा अभिषेक करने को भेजा था; इसलिए प्रभु का वह सन्देश सुनो। सर्वशक्तिमान प्रभु यही कहते हैं।” तो यहाँ प्रभु का एक वचन है। “मैं अमालेकियों को उस चीज़ के लिए दण्ड दूँगा जो उन्होंने इस्राएल के साथ किया था जब उन्होंने उन्हें मिस्र से बाहर

आते समय रास्ते में रोक दिया था।" याद रखें, हमने उस पर ध्यान दिया था। वे सिनाई की ओर जा रहे थे, अमालेकियों ने आक्रमण किया, और यहोवा ने यहोशू से कहा, इसे लिख ले। अब उसने शाऊल को आज्ञा दी, "अमालेकियों पर चढ़ाई करो; जो कुछ उनका है उसे पूरी तरह से नष्ट कर दो, उन्हें मत छोड़ो, पुरुषों, महिलाओं और बच्चों और भेड़-बकरियों, मवेशियों और सूअरों को मार डालो।" यह *यहाँ है*, ठीक वैसे ही जैसे जोशुआ की किताब में है। ठीक है, शाऊल अमालेकियों पर आक्रमण करता है, परन्तु पद 8 में आप पढ़ते हैं कि उसने अगाग को जीवित पकड़ लिया, और 1 शमूएल 15:9 अगाग और सर्वोत्तम भेड़-बकरियों, गाय-बैलों, मोटे सूअरों और जो कुछ अच्छा था, उसे भी छोड़ दिया। और यहोवा ने आकर शमूएल से कहा, मुझे दुख है कि मैं ने शाऊल को राजा बनाया, क्योंकि वह मुझ से फिर गया है, और मेरी शिक्षा के अनुसार नहीं चला। सचमुच, "उसने मेरी बात नहीं मानी।" "मुझसे दूर हो गया है" 11:14 में वही अभिव्यक्ति है, जिसका अर्थ है कि वह "प्रभु के पीछे नहीं है।"

इसलिए यहोवा ने शमूएल को शाऊल का सामना करने के लिए भेजा, और जब शमूएल उसके पास पहुँचा, तो ध्यान दें कि शाऊल पद 13 में क्या कहता है : "शाऊल ने कहा, 'यहोवा तुम्हें आशीर्वाद दे! मैंने प्रभु के निर्देशों का पालन किया है।' शमूएल इससे प्रभावित नहीं हुआ और उसने पूछा: "फिर मेरे कानों में भेड़ों का मिमियाना क्या है, मवेशियों का मिमियाना क्या है?" तब शाऊल ने इसे उचित ठहराते हुए कहा, "सैनिक उन्हें ले आए [वह जिम्मेदारी बदलने की कोशिश करता है]; उन्होंने सर्वोत्तम भेड़-बकरियों और मवेशियों को प्रभु को बलि चढ़ाने के लिए छोड़ दिया"—सर्वनाम पर ध्यान दें—"तुम्हारा परमेश्वर।" वह यह नहीं कहता, "मेरे भगवान।" "लेकिन हमने बाकी को पूरी तरह से नष्ट कर दिया।" सैमुअल इसे स्वीकार नहीं करता; श्लोक 19, "तुमने प्रभु की आज्ञा क्यों नहीं मानी? तू ने लूट क्यों की, और यहोवा की दृष्टि में बुरा क्यों किया?" शाऊल ने कहा, "परन्तु मैंने यहोवा की आज्ञा मानी।" वह खुद को सही ठहराने की कोशिश करता है।

शाऊल और डेविड के बीच यही अंतर है। डेविड ने कुछ बुरे काम किए, लेकिन हर बार जब उसका सामना किसी भविष्यवक्ता से हुआ, तो उसने कोई बहाना नहीं बनाया, दोष मढ़ने की कोशिश नहीं की, जिम्मेदारी स्वीकार की और पश्चाताप किया। शाऊल ऐसा नहीं करता. और शाऊल 1 शमूएल 15:20 में कहता है, "मैंने प्रभु की आज्ञा का पालन किया। मैं उस मिशन पर गया

जो प्रभु ने मुझे सौंपा था। मैंने अमालेकियों को पूरी तरह नष्ट कर दिया और उनके राजा अगाग को वापस ले आया। सैनिकों ने लूट में से भेड़-बकरी और मवेशियों को ले लिया, उनमें से सबसे अच्छा हिस्सा भगवान को समर्पित किया गया था, गिलगाल में आपके भगवान भगवान को बलिदान करने के लिए" - फिर से ध्यान दें, "अपने भगवान"।

ऐसा लगता है मानो इन अनुष्ठानों से गुजरना किसी तरह इसे पूरी तरह से उचित ठहराता है। सैमुअल का उत्तर बलिदान और आज्ञाकारिता के संबंध पर एक उत्कृष्ट कथन है। वह 1 शमूएल 15:22 में कहता है, "क्या यहोवा होमबलि और मेलबलि से उतना प्रसन्न होता है, जितना अपनी बात मानने से प्रसन्न होता है? आज्ञा मानना बलिदान से उत्तम है, और चौकस रहना मेढ़ों की चर्बी से उत्तम है। क्योंकि विद्रोह शकुन कहने के पाप के समान है, और अहंकार मूर्तिपूजा की बुराई के समान है। क्योंकि तू ने यहोवा का वचन तुच्छ जाना है, इस कारण उस ने तुझे राजा होने से तुच्छ जाना है। यह आज्ञा मानने और विद्रोह न करने की 12:14 की सशर्त शर्त पर वापस जाता है। शाऊल ने विद्रोह किया, और फिर उसे उचित ठहराने का प्रयास किया। इस कारण, प्रभु कहते हैं, "मैंने तुम्हें राजा के रूप में अस्वीकार कर दिया है।"

अगले ही अध्याय, 1 शमूएल 16 में, शमूएल को शाऊल के स्थान पर, जो कि डेविड है, अभिषेक करने के लिए नियुक्त किया गया है। 1 शमूएल के शेष भाग में शाऊल के पतन और दाऊद के उत्थान का वर्णन है। इसलिए पुस्तक के अंत में, शाऊल मर जाता है, पलिशतियों के खिलाफ लड़ाई में अपनी जान ले लेता है। फिर 2 में सैमुअल डेविड सिंहासन ग्रहण करता है। सातवीं. विभाजित साम्राज्य

ए. 1 और 2 राजा बी. 1 और 2 इतिहास

मैं उन टिप्पणियों के साथ सैमुअल की चर्चा को विराम देने जा रहा हूँ। मैं रोमन अंक VII पर जाना चाहता हूँ। आपकी रूपरेखा पर, "विभाजित साम्राज्य।" A. "1 और 2 राजा" है और B. "1 और 2 इतिहास" है। मैं विभाजित राज्य के इस शीर्षक के तहत राजाओं और पैगम्बरों के बारे में कुछ बातें कहकर अपनी चर्चा समाप्त करना चाहता था। निःसंदेह, दाऊद 2 शमूएल तक शासन करता रहा। 1 राजा 1 और 2 में आपको सुलैमान के शासनकाल में परिवर्तन मिलता है। फिर आपके पास 1 राजा 11 के माध्यम से सुलैमान का शासन है, लेकिन 1 राजा 12 में आपको विभाजित

राज्य में संक्रमण मिलता है। फिर तुम्हारे पास दक्षिण में रहबियाम और उत्तर में यारोबाम है। रहबियाम दाऊद के वंश का है, और यारोबाम दाऊद के वंश का नहीं है। तो यह यहाँ विभाजित राज्य है, 931 ईसा पूर्व में विभाजित

1. ए. पुस्तक का नाम और दायरा [1 और 2 राजा] "1 और 2 राजा" के तहत, ए। "पुस्तक का नाम और दायरा" है। याद रखें कि जब हमने सैमुअल के नाम के बारे में बात की थी, तो मैंने उल्लेख किया था कि यह मूल रूप से एक किताब थी जिसे बाद में विभाजित किया गया था, जिसका अंत शाऊल की मृत्यु के साथ हुआ। परंपरा हमें बताती है कि राजाओं की पुस्तक भी मूलतः एक ही पुस्तक थी। सेप्टुआजेंट ने सैमुअल और किंग्स दोनों को दो पुस्तकों में विभाजित किया और उन्हें "राज्यों का" 1, 2, 3 और 4 कहा। वुल्गेट ने इसे किंग्स 1, 2, 3 और 4 में संशोधित किया। मैंने पहले सैमुअल की चर्चा के तहत इसका उल्लेख किया था। कभी-कभी टिप्पणियाँ किंग 1, 2, 3, और 4 होंगी। इसलिए आपको इसके बारे में पता होना चाहिए। हम किताबों को 1 और 2 राजा और 1 और 2 सैमुअल के नाम से जानते हैं। लैटिन वुल्गेट परंपरा में 1 और 2 राजा, राजा 3 और 4 होंगे। लेकिन जैसा कि मैंने एक मिनट पहले उल्लेख किया था, पुस्तक डेविड के शासन से सुलैमान के शासन में परिवर्तन के साथ शुरू होती है, और यहूदा के अंतिम राजाओं - यहोयाकीन और सिदकिय्याह के वृतांत के साथ समाप्त होती है, दोनों को बेबीलोन की निर्वासन में बंदी बना लिया गया था। राजाओं का आरम्भ दाऊद के शासन के अन्तिम वर्ष से होता है। फिर यह दिखाता है कि कैसे सुलैमान के शासनकाल के अंत में इज़राइल विभाजित हो गया और फिर कैसे उत्तरी साम्राज्य अंततः अश्शूर के अधीन हो गया और दक्षिणी साम्राज्य पर बेबीलोनियों ने कब्जा कर लिया। तो यह पुस्तक लगभग 400 वर्षों की अवधि को कवर करती है, लगभग 970 ईसा पूर्व से 586 ईसा पूर्व तक यानी लगभग 400 वर्ष।

जहां तक तारीखों का सवाल है, 931 ईसा पूर्व एक महत्वपूर्ण तारीख है—क्या कोई जानता है कि वह क्या है? यह राज्य का विभाजन है, 931 ईसा पूर्व में सुलैमान के शासनकाल के बाद विभाजित राज्य में परिवर्तन के साथ 721 और 586 अन्य दो महत्वपूर्ण तिथियाँ हैं। 721 ईसा पूर्व अश्शूरियों का पतन है Northern kingdom, और 586 ईसा पूर्व बेबीलोनियों के हाथों दक्षिणी

साम्राज्य, यहूदा का पतन है। यह आपको एक व्यापक कालानुक्रमिक संरचना प्रदान करता है।

किंग्स का लेखक अज्ञात है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह कोई ऐसा व्यक्ति था जो यिर्मयाह का समकालीन था, जिसकी पहले के राजाओं के शासनकाल के अभिलेखों तक पहुंच थी। लेकिन हम नहीं जानते कि लेखक कौन है।

## 2. राजाओं का उद्देश्य

आपकी रूपरेखा में क्रमांक 2 है "राजाओं का उद्देश्य।" पृष्ठ 56 पर अपने उद्धरण देखें। ग्लिसन आर्चर का 1 और 2 राजाओं पर एक पैराग्राफ है, जो कहता है, "इन दो पुस्तकों का विषय इज़राइल के इतिहास के आधार पर प्रदर्शित करना था कि राष्ट्र का कल्याण अंततः ईमानदारी पर निर्भर करता है।" यह यहोवा के साथ वाचा के प्रति वफादारी है, और किसी भी शासक की सफलता को मोज़ेक संविधान के पालन की डिग्री और लोगों के सामने शुद्ध और ईश्वर-सम्मानित गवाही के रखरखाव की डिग्री से मापा जाना चाहिए। इसका उद्देश्य उन घटनाओं को सामने रखना था जो ईश्वर और उसके मुक्ति के कार्यक्रम के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण थीं। लेखक का Israelराष्ट्रवादी उद्देश्यों के आधार पर नायकों का महिमामंडन करने का कोई इरादा नहीं था। इसलिए उन्होंने उन गुज़रती उपलब्धियों को भी छोड़ दिया जिनका धर्मनिरपेक्ष इतिहासकारों की नज़र में बहुत महत्व था। उनकी मुख्य चिंता यह दिखाना था कि प्रत्येक क्रमिक शासक ने ईश्वर और उसकी वाचा की जिम्मेदारी के साथ कैसे व्यवहार किया।

अब याद है मैंने कहा था कि 1 और 2 शमूएल का समग्र विषय वाचा का राजत्व है? वह विषय 1 और 2 राजाओं पर प्रवाहित होता है। इन राजाओं का मूल्यांकन उनकी वाचा निष्ठा के आधार पर किया गया था। यह वह परिप्रेक्ष्य है जो वास्तव में यहोशू से न्यायाधीशों, सैमुअल और किंग्स के माध्यम से चलता है और यह वह ज्यूटेरोनोमिक परिप्रेक्ष्य है।

उस वाचा संबंधी परिप्रेक्ष्य के महत्व के कारण, विभिन्न राजाओं के संबंध में भविष्यवक्ताओं की भूमिका पर बहुत अधिक जोर दिया गया प्रतीत होता है। जिन राजाओं के साथ सबसे अधिक अच्छा व्यवहार किया गया वे वे राजा हैं जिनके इतिहास में भविष्यवक्ताओं का एक महत्वपूर्ण कार्य था। यह सत्य है कि चाहे संबंध शत्रुतापूर्ण हो या अधिक अनुकूल। उदाहरण के लिए, यारोबाम प्रथम

के शासनकाल में, अहियाह भविष्यवक्ता ने उसका सामना किया। अहाब के साथ, वह राजा जिसने भटकाया था Northern Kingdom, याद रखें कि भविष्यवक्ता कौन था? एलियाह। एलियाह की प्रमुखता के कारण अहाब के शासनकाल को कई अध्याय दिए गए हैं। एक राजा के साथ अधिक अनुकूल संबंध के साथ, आप हिजकियाह के बारे में सोचते हैं जहां यशायाह का उसके जीवन और शासन पर मजबूत प्रभाव था। याद रखें कि राजाओं और भविष्यवक्ताओं के बीच संबंध वास्तव में सैमुअल द्वारा स्थापित किया गया था। शमूएल एक भविष्यवक्ता था, और वह राजसत्ता स्थापित करने में परमेश्वर का साधन था। हमने उस पाठ को देखा जहां सैमुअल ने कहा था, "मैं तुम्हें सही तरीके से काम करना सिखाने जा रहा हूँ।" भविष्यवक्ताओं ने राजाओं के साथ-साथ लोगों के लिए भी यही किया। मैं Israel, राजा हमेशा भविष्यवक्ता के प्रति जवाबदेह होता था।

अहाब और एलियाह , परिणामस्वरूप, 1 और 2 राजाओं में आपके पास समय की इस अवधि का वर्णन है जिसमें राजाओं को उनकी वाचा के दायित्व के प्रति उनकी वफादारी के आधार पर आंका जाता है। मैंने इस पाठ्यक्रम की शुरुआत में उल्लेख किया था कि आप इस परिप्रेक्ष्य को ओमरी और उसके बेटे अहाब जैसे किसी व्यक्ति में देखते हैं। ओमरी एक बहुत ही महत्वपूर्ण राजा था। उनकी स्थापना के सदियों बाद असीरियन इतिहास में इज़राइल को " ओमरी की भूमि" कहा गया । उन्होंने ही सामरिया को उत्तरी साम्राज्य की राजधानी के रूप में स्थापित किया था। उनका एक राजवंश था जो कई पीढ़ियों तक चला। उसका इलाज 1 राजा 16:23-28 में किया गया है। उन्हें केवल छः श्लोक दिये गये हैं। उनके बारे में बहुत कम कहा जाता है। लेकिन उसके बेटे अहाब पर बहुत अधिक ध्यान दिया जाता है, क्योंकि अहाब ही वह है जिसने इस्राएल को प्रभु का अनुसरण करने के बजाय बाल और अशतोरेत की पूजा करने के लिए भटका दिया था। यह अहाब के शासनकाल के दौरान है कि एलिजा को एक भविष्यवक्ता के रूप में उभारा गया है, और आपके पास एलिजा और अहाब के बीच बातचीत की सभी कहानियाँ हैं।

हिजकियाह और योशियाह लेकिन यदि आप राजाओं के मूल्यांकन को देखें, तो आपको केवल दो राजाओं की अयोग्य स्वीकृति मिलेगी, दोनों यहूदा के, और वह हिजकियाह और योशियाह हैं।

हिजकिय्याह 2 किंग्स 18-20 में है और योशिय्याह 2 किंग्स 22-23 में है। एक संख्या की योग्य स्वीकृति है, जहां वे अपने पिता डेविड के रास्ते पर चले, लेकिन - और फिर आपको योग्यता मिलती है - लेकिन उन्होंने ऊंचे स्थानों, या उस तरह की किसी चीज़ को नहीं हटाया। सबसे कड़ी अस्वीकृति उत्तर में अहाब और दक्षिण में मनश्शे की है। तो आपको अहाब और मनश्शे में उच्चतम स्तर की बेवफाई और हिजकिय्याह और योशिय्याह में उच्चतम स्तर की वफादारी वाले राजाओं का उस तरह का मूल्यांकन मिलता है।

राज्यों का पतन मुझे लगता है कि किंग्स की पुस्तक का अंतिम परिणाम उत्तरी और दक्षिणी दोनों राज्यों के पतन में ईश्वर के न्याय को दिखाना है। आप पाते हैं कि इसका वर्णन 2 राजा 17 में काफी अच्छी तरह से किया गया है। आप 2 राजा 17:5 में पढ़ते हैं, “ अशशूर के राजा ने पूरे देश पर आक्रमण किया, सामरिया के खिलाफ चढ़ाई की और तीन साल तक उसे घेरे रखा। होशे के नौवें वर्ष में, अशशूर के राजा ने सामरिया पर कब्ज़ा कर लिया और इस्राएलियों को अशशूर में निर्वासित कर दिया। [अब ध्यान दें कि आगे क्या है, जो इस बात का स्पष्टीकरण देता है कि ऐसा क्यों हुआ।] उसने उन्हें हलाह में, गोज़ान में Habor River और मेदियों के कस्बों में बसाया। यह सब इसलिये हुआ क्योंकि इस्राएलियों ने अपने परमेश्वर यहोवा के विरुद्ध पाप किया था, जो उन्हें मिस्र के राजा फिरौन के वश से निकाल कर मिस्र से निकाल लाया था। वे अन्य देवताओं की पूजा करते थे और उन राष्ट्रों की प्रथाओं का पालन करते थे जिन्हें यहोवा ने उनके सामने से निकाल दिया था। पद 9 में, इस्राएलियों ने यहोवा अपने परमेश्वर के विरुद्ध ऐसे काम किए जो उचित नहीं थे। पद 10, उन्होंने पवित्र पत्थर और अशतोरत के खम्भे खड़े किए। श्लोक 12, उन्होंने मूर्तियों की पूजा की, और प्रभु ने कहा कि उन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था। श्लोक 13, प्रभु ने Israel अपने सभी भविष्यवक्ताओं और द्रष्टाओं के माध्यम से चेतावनी दी, "अपनी बुरी चाल से फिरो, मेरी आज्ञाओं का पालन करो। " Judah पद 14, परन्तु उन्होंने सुनने से इन्कार किया, और अपने पुरखाओं के समान हठीले हो गए, और अपने परमेश्वर यहोवा पर भरोसा न रखा।

निर्वासन 2 राजा 17:15 इसका सारांश देता है: निर्वासन क्यों? “उन्होंने उसके नियमों और

उस वाचा को, जो उस ने उनके पुरखाओं से बान्धी थी, और चेतावनियों को, जो उस ने उन्हें दी थीं, अस्वीकार किया। उन्होंने निकम्मी मूर्तियों का अनुसरण किया और स्वयं को निकम्मा बना लिया। उन्होंने अपने आस-पास के राष्ट्रों का अनुकरण किया।” यही सार है. यही वनवास का कारण है. तो क्या हुआ? पद 16 में आपने पढ़ा , "इसलिये यहोवा इस्राएल पर क्रोधित हुआ और उन्हें अपने साम्हने से दूर कर दिया।" देखो, यह उत्तरी साम्राज्य का निर्वासन और सामरिया का पतन है; लेकिन यहूदा के बारे में क्या?

कुछ समय बाद तक बेबीलोनियों के अधीन यहूदा निर्वासन में शामिल नहीं हुआ, जब मेसोपोटामिया में सत्ता अशूरियों से बेबीलोनियों के पास चली गई थी, लेकिन यह वही मुद्दा है। अध्याय 17 में यहूदा को नोटिस दिया गया है। इसमें कहा गया है कि केवल यहूदा ही बचा रहा और यहां तक कि यहूदा ने अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं का पालन नहीं किया। उन्होंने मूल रूप से उन्हीं प्रथाओं का पालन किया जो इज़राइल ने शुरू की थीं। इसलिये यहोवा ने इस्राएल के सब लोगोंको अस्वीकार कर दिया। उस ने उनको दुःख दिया, और लुटेरों के हाथ में कर दिया, और अपने साम्हने से निकाल दिया।

तो यह है कैद में क्यों जाने का स्पष्टीकरण . Israel जहां तक पुस्तक की संरचना का सवाल है, मुझे लगता है कि इससे आपको पुस्तक की सामग्री पर कुछ नियंत्रण पाने में मदद मिलेगी। जब आप विभाजित साम्राज्य काल में पहुँचते हैं, तो यह उत्तर और दक्षिण के साम्राज्य का समकालिक शासन होता है। इसकी संरचना करना थोड़ा कठिन है, लेकिन यह आपको एक व्यापक संरचना प्रदान करेगा। 1 राजाओं के पहले 11 अध्याय सुलैमान और उसके अधीन संयुक्त राज्य हैं, और फिर 1 राजा 12 में आपके पास 931 ईसा पूर्व में दक्षिण में रूहबियाम और उत्तर में यारोबाम के साथ विभाजित राज्य है यदि आप 1 राजा 12 से 2 राजाओं तक जाते हैं 17, जिस अध्याय को हमने अभी देखा, वह 721 ईसा पूर्व में सामरिया के पतन तक विभाजित राज्य है, फिर 2 राजाओं 18-25 में जो होता है वह इसराइल के पतन के बाद पुस्तक के अंत में यहूदा के पतन तक अकेले यहूदा की निरंतरता है। . तो यह आपको 1 और 2 राजाओं की सामग्री की एक सामान्य संरचना प्रदान करता है।

1 और 2 इतिहास: भविष्य की इसकी संभावना, निर्वासन के बाद और डेविड की लाइन, मंदिर और पुनर्स्थापित समुदाय पर ध्यान केंद्रित

आइए 1 और 2 इतिहास पर चलते हैं। मुझे यहां कुछ टिप्पणियाँ करने दीजिए। मुझे लगता है कि अक्सर यह सवाल उठता है कि 1 और 2 राजाओं और 1 और 2 इतिहास के बीच क्या अंतर है? आपके पास ये दो पुस्तकें क्यों हैं जिनमें पर्याप्त मात्रा में ओवरलैप है? मुझे लगता है कि बुनियादी अंतर यह है कि किंग्स पूर्वव्यापी है; यह निर्वासन में समुदाय की जरूरतों को संबोधित है। यह उन लोगों को उनकी स्थिति का कारण बताता है—जिस कारण से वे निर्वासन में हैं। इतिहास की एक अलग संभावना है। इतिहास निर्वासन से वापस आए पुनर्स्थापित समुदाय की जरूरतों को संबोधित करता है। यह उन चीज़ों पर ज़ोर देता है जो निर्वासन से लौटे लोगों को बेबीलोन के निर्वासन से लौटने के बाद सुदृढ़ आधार पर पुनर्निर्माण की प्रक्रिया शुरू करने के लिए आधार प्रदान करेंगी।

अब, उस सामान्य विचार को ध्यान में रखते हुए, इतिहास के वे कौन से जोर हैं जो निर्वासन से लौटने वालों को भविष्य के निर्माण के लिए यह आधार प्रदान करते हैं? पहला प्रमुख जोर यहूदा में दाऊद और उसके उत्तराधिकारियों के शासन पर है। यह एक केंद्र बिंदु बन जाता है, और यह 1 इतिहास की शुरुआत से ही मौजूद है जहां आपके पास वंशावली सामग्री है। सबसे पहली जनजाति जिसका पता लगाया गया है वह यहूदा की है। यहूदा के गोत्र के भीतर, डेविड के घराने पर डेविड की पीढ़ियों का पता लगाने वाले अध्याय 3 की संपूर्णता पर जोर दिया गया है। इसलिए ध्यान डेविड पर है और अन्य जनजातियों पर तुलनात्मक रूप से कम ध्यान दिया गया है। मुझे लगता है कि लेखक जो कर रहा है वह वादा किए गए मसीहा के लिए आशा पर जोर दे रहा है, जिसके बारे में शुरुआती भविष्यवक्ताओं ने डेविड की पंक्ति में बने रहने की बात की थी और 2 शमूएल 7 में डेविडिक वाचा में वादा किया था, जिसे 1 इतिहास 17 में दोहराया गया था।

इसलिए ध्यान डेविड और भविष्य के लिए उनकी लाइन पर है। इसी कारण से, उत्तर के राजाओं का उल्लेख बहुत कम है। ये केवल डेविडिक वंश के राजा हैं। उत्तर के राजाओं का उल्लेख केवल उन स्थितियों के संबंध में किया गया है जिनमें वे दक्षिण में होने वाली किसी घटना में शामिल थे। उत्तरी साम्राज्य के पतन का कोई संदर्भ भी नहीं है। डेविड की पंक्ति, भले ही इसका व्यापक उपचार किया गया हो, डेविड के पारिवारिक मामलों, बथशेबा घटना और उसके बाद के सभी

परिणामों, उसके परिणामस्वरूप डेविड के जीवन और परिवार में आए पतन का वर्णन नहीं करती है। डेविड को आने वाले मसीहा राजा के लिए सच्चे ईश्वरशासित राजा के उदाहरण के रूप में चित्रित किया गया है।

तो आपका जोर डेविड और उसके घराने पर है, और आपका जोर मंदिर और उसकी सेवा पर उस विरासत के रूप में है जो डेविड के घराने द्वारा बहाल समुदाय के लिए छोड़ी गई थी। पुनर्निर्मित मंदिर और इसकी निरंतर सेवा को इस बात के प्रमाण के रूप में देखा जाता है कि भगवान का अपने लोगों के साथ अंत नहीं हुआ है; उसके लोगों के लिए अभी भी भविष्य है।

पुनर्स्थापित समुदाय के लिए तीसरा जोर कानून और पैगम्बरों के प्रति आज्ञाकारिता के महत्व पर है, और इस पर दैवीय प्रतिशोध के विषय पर ध्यान आकर्षित करके जोर दिया गया है। मेरे कहने का मतलब यह है कि जैसा कि इतिहासकार विभिन्न राजाओं के शासनकाल का वर्णन करता है, वह इस बात पर जोर देता है कि पाप न्याय लाता है, जबकि आज्ञाकारिता आशीर्वाद और समृद्धि लाती है। यहूदा के राजाओं के शासनकाल में प्रदर्शित यह अवधारणा एक ऐसी नींव है जिस पर निर्वासन से लौटने के बाद राष्ट्र का निर्माण किया जाना है।

इसलिए किंग्स अधिक पूर्वव्यापी है, निर्वासन में लोगों को समझाते हुए कि वे वहां क्यों हैं। इतिहास अधिक संभावनाशील है, जो निर्वासन के बाद एक बहाल समुदाय की नींव रखता है।

डायने टैर द्वारा प्रतिलेखित  
 टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादित  
 एलिजाबेथ फिशर  
 द्वारा अंतिम संपादन      टेड हिल्डेब्रांट द्वारा पुनः सुनाया गया